Tele : 27666 776
27666 773
Fax : 27667 242

SCHOOL OF OPEN LEARNING
(CAMPUS OF OPEN LEARNING)
UNIVERSITY OF DELHI
5, CAVALRY LANE
DELHI-110007

_____
_____
_____

Dear Sir/Madam,

The School of Open Learning approaches you to write lessons/translation of lessons on the following topic(s) for the students enrolled in the School of Open Learning, University of Delhi in the Course_____.

Medium _____

Paper_____

Topic_____

No. of Lessons for writing/translating_____

1. The revised honorarium rates for writing/translating and handing over the ready to print soft and hard copy of the lesson (including all typing and other charges) are as follows: a) Rs. 5000/- for handing over the ready to print soft and hard copy of the lesson and b) Rs. 2500/- for translating one lesson for the Under-graduate/Post-graduate courses. Thus the School will pay a sum of Rs._____ (Rs. 5000/Rs.2500 x ____ no. of lessons for writing/translating) honorarium for writing lessons/translating lessons to you as a token of appreciation towards your support.
2. The lesson should be ready to print laser typeset with following specifications:

S.No.	Specifications	For English Medium	For Hindi Medium
1.	Paper size	23x36/8, A-4 size	23x36/8, A-4 size
2.	Print Area	6,1/2"x9,1/2"	6,1/2"x9,1/2"
3.	Software	MS word	Pagemaker
4.	Font	Times New Roman	Kruti/Chanakya/Shiva/Narad
5.	Title Heading Size	16 point Bold Caps	22 points Bold Caps
6.	Author name size	12point italics	14point Bold
7.	Side heading size	12 point bold	16 point bold
8.	Text size	12 point Normal	14 point normal
9.	Leading in lines	14 point	16 point
10.	Leading above the side heading	22point	24 point
11.	Leading below the side heading	20 point	22 point
12.	Folio point size	12 point normal	12 point normal
13.	Space between matter & folio	Not more than ½ inch	Not more than ½ inch
14.	Words per lesson	5000-6000	5000-6000

3. The copyright © would rest with the School of Open Learning, University of Delhi, Delhi.
4. The matter should not be copied from any of the books or journals already published. Only proper references, quotations, literature may be cited. The author may quote Suggested Readings at the end of the lesson.
5. While preparing the lessons, you may please take into consideration the main points which are attached herewith by the Department. It is also requested to kindly send us ready to print two hard copies and one soft copy in CD of the manuscript of the lesson/s. The hard copies of the lessons will be verified by the teacher incharge of the Department to ensure the compatibility of contents as per syllabi and of requisite quality.

...2.

Tele : 27666 776
27666 773
Fax : 27667 242

SCHOOL OF OPEN LEARNING
(CAMPUS OF OPEN LEARNING)
UNIVERSITY OF DELHI
5, CAVALRY LANE
DELHI-110007

6. You are requested to kindly send the manuscript of (soft & hard copy) of an individual lesson as soon as it is ready, but not more than twenty days from the dispatch of this letter. May kindly send respective lesson as and when it is completed in sequence rather than sending the whole set of lessons at one go that may help us to save time in printing multiple copies of study material.

May I request you to kindly accept this assignment so that your expertise may be made available to the School. You may please send your consent at the earliest.

I am also enclosing herewith a Declaration/Undertaking and Bill for Lesson Writing/Translation Proformas for your kind perusal which is to be submitted along with two hard copies and one soft copy in CD of the manuscript of the lesson/s.

Looking forward to get your kind co-operation please,

Yours sincerely,

Teacher-in-Charge
Department of _____ SOL

Executive Director

Encls. a.a.

Declaration/Undertaking

I, hereby certify that the ready to print copy of the Study Material/Lessons listed below has/have been prepared as course material for the School of Open Learning, University of Delhi, Delhi-110007 for the course/s and paper/s as specified below has/have been written by me and is my original work.

I also certify the contents of the Study Material/Lessons are in accordance with the prescribed syllabi of the University and the material is of the requisite quality as per the standard of the Course. I also certify that due acknowledgments have been made for all quotations and all materials borrowed from other sources.

Title of the Study Material _____
Course_____
Subject and Paper_____
Medium_____

I, undertake the responsibility of editing/improving of any part of the Study Material/Lesson if it is required to further enhance the quality of study material.

I, hereby assign all rights in the article/s to the School of Open Learning, University of Delhi, 5, Cavalry Lane, Delhi-110007 including the right to get the study material/ translated and to circulate it in the original form or in translation, in printing or through the electronic media.

_____
Signature of the Resource Person
Name _____
Address _____
_____

(For Department Use)

Certified that the Study Material/Lessons developed by Dr./Mr./Ms._____ are having the requisite quality, as per our specification and standards of University of Delhi.

_____
Signature of Teacher-in-Charge
Department of _____
School of Open Learning
University of Delhi
Delhi

SCHOOL OF OPEN LEARNING (CAMPUS OF OPEN LEARNING)
UNIVERSITY OF DELHI: DELHI

BILL FOR LESSON WRITING/TRANSLATION

1. Name of the Tacher_____

2. Address _____

3. Course: M.A./M.Com./B.A (Hons.) Prog. Pol.Sc./ English, B.Com.(Hons.)/ B.Com./ B.A. Programme, _____ Year.

4. Subject_____Medium_____

5. Details of the Lessons:

S.No.	Paper No.	Lesson No.	Topic of the Lesson	No. of Pages typed

6. Total No. of Lessons_____ Total No. of Typed pages_____

7. Remuneration for lesson writing/translation @ Rs. _____ (Per Lesson) =Rs._____

8. Amount claimed (in figure) Rs. _____(in Words) _____

Date: Signature

Certified that the above _____ Lesson(s)

was/were written/translated by_____

_____
Signature of the Teacher-in-Charge,
Deptt. of _____SOL

(IX) संस्कृति : 22 Pt.

(आचार्य नरेन्द्र देव) 16 Pt.

14 Pt. डॉ. सुधीर शर्मा

लेखक परिचय 16 Pt.

14 Pt. Leading 16 Pt.

आचार्य नरेद्र देव का जन्म 31 अक्टूबर 1889 ई. को उत्तर प्रदेश के सीतापुर नामक स्थान में हुआ। आचार्य जी ने 1913 ई. में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1915 ई. में एल.एल.बी. की परीक्षा पास की और वकालत प्रारम्भ कर दी। परन्तु सन् 1920 ई. में स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने के कारण इन्होंने वकालत छोड़ दी। आचार्य जी के व्यक्तित्व के दो पक्ष हैं—एक राजनीति और दूसरा अध्ययन अध्यापन तथा लेखन से सम्बन्धित। नरेन्द्र जी ने लोकमान्य तिलक के नेतृत्व में राजनैतिक जीवन में प्रवेश किया। इन्होंने सन् 1920 में गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन में भाग लिया। बाद में फैजाबाद में होमरुम लीग की स्थापना की और स्वयं उसके मंत्री बने। सन् 1930 ई. में सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेने के कारण जेल गये। सन् 1932 ई. में एक अन्य सिलसिले में इन्हें एक बार फिर जेल जाना पड़ा। जेल से बाहर आने पर सन् 1934 ई. में ये अखिल भारतीय कांग्रेस समाजवादी पार्टी के पहले अधिवेशन के अध्यक्ष नियुक्त किये गए। इसी प्रकार सन् 1936 ई. में इन्हें उत्तर प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष पद का कार्य भार सौंपा गया। मार्च 1948 में कांग्रेस पार्टी और विधान सभा से त्यागपत्र दे दिया। एक बार फिर सन् 1952 ई. में ये राज्य सभा के सदस्य चुने गये। धीरे-धीरे इनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। इसलिए स्वास्थ्य लाभ के लिए ये यूरोप की यात्रा पर गये। परन्तु इनका स्वास्थ्य प्रतिदिन गिरता ही गया। अन्त में राजनीति, साहित्य और समाज की सेवा करते-करते 67 वर्ष की आयु में इन्होंने 19 फरवरी 1956 ई. में पेतंदुराई (तमिलनाडु) नामक स्थान पर अपना यह पार्थिव शरीर त्याग दिया। इनकी मृत्यु पर पंडित जवाहर लाल नेहरु ने कहा था— ''वे अप्रतिम गुणों के व्यक्ति थे। कई क्षेत्रों में अप्रतिम-आत्मशक्ति में अप्रतिम, बुद्धि और प्रतिभा में अप्रतिम, बौद्धिक निष्ठा में अप्रतिम तथा अन्य कई दृष्यिों में अप्रतिम।''

आचार्य जी के व्यक्तित्व का एक दूसरा पक्ष अध्ययन-अध्यापन तथा लेखन से जुड़ा हुआ है। आचार्य जी के व्यक्तित्व की विशेषता यह है कि राजनीति में व्यस्त रहते हुए भी पढ़ने-लिखने के लिए भी समय निकाल ही लिया करते थे। जिसका प्रमाण उनके उपलब्ध ग्रन्थ हैं, लेख और भाषण हैं। जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि आचार्य नरेन्द्र देव जी बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी थे। वे राजनेता, चिन्तक, लेखक, समाजसेवी, पत्रकार, साहित्यकार के साथ-साथ आदर्श अध्यापक थे। इनके अध्यापन को देखकर डॉद शंकरदयाल शर्मा जैसे विद्वानों ने इन्हें 'संत शिक्षक' की संज्ञा से सम्बोधित किया था। आचार्य नरेन्द्रदेव जी का साहित्यिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। वे अपने जीवन में नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, अखिल भारतीय राष्ट्रीय भाषा परिषद, संस्कृत परिषद जैसे संस्थाओं से समय-समय पर जुड़े रहे। पत्रकारिता में भी इनकी गहरी रुचि रही थी। जिसका प्रमाण काशी विद्यापीठ से इनके सम्पादकत्व में छपने वाली 'त्रैमासिक समाज पत्रिका' है।

आचार्य जी का अध्ययन क्षेत्र बहुत विस्तृत था। इन्होंने जहाँ विभिन्न भाषाओं का अध्ययन किया वहाँ उनके भाषा विज्ञान को भी जाना। धर्म, इतिहास और राजनीति विज्ञान के तो ये प्रकाण्ड पण्डित थे। अपने आरम्भिक जीवन में इन्होंने काशी विद्यापीठ में अध्यापन कार्य किया। वहीं इन्हें आचार्य की उपाधि मिली। बाद में ये काशी विद्यापीठ और लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त हुए। आचार्य जी अपने काशी में व्यतीत जीवन को ही जीवन का अच्छा समय मानते थे।

लेखन भी आचार्य जी के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। इनके अध्ययन क्षेत्र की तरह ही इनका लेखन क्षेत्र भी बहुआयामी है। इन्होंने इतिहास, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र पर हिन्दी में विभिन्न लेख लिखे। विद्यार्थियों के लिए इंग्लैंड, आयरलैंड, रूस, इटली, अमेरिका आदि देशों के इतिहास को छोटे-छोटे ग्रन्थों के रूप में लिखकर विद्यार्थियों को लाभान्वित किया। सन 1930-31 ई. में समाजवाद से प्रभावित होकर इन्होंने कई लेख लिखे जिनका बाद में पुस्तक रूप में संकलन हुआ। नरेन्द्र जी एक अच्छे शिक्षा शास्त्री थे इसका ज्ञान हमें उनके 'जनवाणी' में शिक्षकों की स्थिति और आधुनिक व प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली पर लिखे गये लेखों से पता चलता है। इस प्रकार आचार्य जी के व्यक्तित्व का यह दूसरा पक्ष भी बड़ा समृद्ध था।हमें उनके 'जनवाणी' में शिक्षकों की स्थिति और आधुनिक व प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली पर लिखे गये लेखों से पता चलता है। इस प्रकार आचार्य जी के व्यक्तित्व का यह दूसरा पक्ष भी बड़ा समृद्ध था।हमें उनके 'जनवाणी' में शिक्षकों की स्थिति और आधुनिक व प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली पर लिखे गये लेखों से पता चलता है। इस प्रकार

आचार्य जी के व्यक्तित्व का यह दूसरा पक्ष भी बड़ा समृद्ध था।

8 Pt. Leading उपर

रचनाएँ 16 Pt

6 Pt नीचे

1.राष्ट्रीयता और समाजवाद – हिन्दी में समाजवादी सिद्धान्तों की व्याख्या करने वाले विद्वानों में आचार्य जी अग्रगण्य हैं। इन्होंने सन् 1930-31 के आस-पास समाजवादी विचारों से सम्बन्धित अनेक लेख लिखे तथा भाषण दिये। वे समय-समय पर 'संघर्ष' पत्रिका में छपते रहे। बाद में इन्हीं भाषणों और लेखों को 'राष्ट्रीयता और समाजवाद' ग्रंथ में संकिलत कर दिया गया।

2. समाजवाद-लक्ष्य और साधन – यह पुस्तक भी उनके समय-समय पर दिए गए भाषणों का संग्रह मात्र है। बाद में इस पुस्तक का समावेश 'राष्ट्रीयता और समाजवाद' ग्रन्थ में कर लिया गया।

3. बौद्ध धर्म दर्शन – यह बौद्ध धर्म सम्बन्धी ग्रंथ है। इसमें बौद्ध धर्म के आदर्शो, भारत में बौद्ध धर्म के विकास, उनके ह्रास और इतिहास को अंकित किया गया है। इस ग्रन्थ की रचना इन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्षो में की। यह विशाल ग्रंथ इनके देहांतोपरान्त प्रकाशित हुआ। सन् 1956 में इस ग्रंथ को हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ रचना घोषित किया गया और इस ग्रन्थ पर पाँच हजार

18 Pt

संस्कृति निबन्ध का सार

8 Pt. Leading उपर

संस्कृति का अर्थ :

6 Pt नीचे

संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा का है। यह दो शब्दों के योग से बना है—सम् + कृति। सम् का अर्थ है किसी को संवारना, किसी वस्तु, कर्म या व्यक्ति को संवारना। कृति का अर्थ है क्रिया। किसी को संवारने की प्रक्रिया को संस्कृति कहते हैं। किसी फूल, पौधे या खेत को संवारना, रत्न को काट छाँट करके संवारना उसको संस्कृत करना कहलाता है, समाज के करने योग्य कर्त्तव्य कर्मो को संवारना भी संस्कृति है। इसलिए संस्कृति का धर्म से घनिष्ठ सम्बन्ध है। संस्कृत हुए धर्म-कर्म का पालन करने वाला संस्कारगत कहलाता है। किसी देश धर्म और जाति के परम्परागत आचार-विचार ही उस देश की संस्कृति कहलाती है। मनुष्य के ऐसे कार्य जिससे उसे लोग अलंकृत समझें, श्रेष्ठ समझें, उन कर्मो का नाम संस्कृति है। जैसे-जैसे विकास होता जाता है यह दृष्टि व्यापक होती जाती है और विश्व एकता के साधन इकट्ठे होने पर यह विश्व एकता धर्म में परिणत होती है। प्राचीन संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा का है। यह दो शब्दों के योग से बना है—सम् + कृति। सम् का अर्थ है किसी को संवारना, किसी वस्तु, कर्म या व्यक्ति को संवारना। कृति का अर्थ है क्रिया। किसी को संवारने की प्रक्रिया को संस्कृति कहते हैं। किसी फूल, पौधे या खेत को संवारना, रत्न को काट छाँट करके संवारना उसको संस्कृत करना कहलाता है, समाज के करने योग्य कर्त्तव्य कर्मो को संवारना भी संस्कृति है। इसलिए संस्कृति का धर्म से घनिष्ठ सम्बन्ध है। संस्कृत हुए धर्म-कर्म का पालन करने वाला संस्कारगत कहलाता है। किसी देश धर्म और जाति के परम्परागत आचार-विचार ही उस देश की संस्कृति कहलाती है। मनुष्य के ऐसे कार्य जिससे उसे लोग अलंकृत समझें, श्रेष्ठ समझें, उन कर्मो का नाम संस्कृति है। जैसे-जैसे विकास होता जाता है यह दृष्टि व्यापक होती जाती है और विश्व एकता के साधन इकट्ठे होने पर यह विश्व एकता धर्म में परिणत होती है। प्राचीन संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा का है। यह दो शब्दों के योग से बना है—सम् + कृति। सम् का अर्थ है किसी को संवारना, किसी वस्तु, कर्म या व्यक्ति को संवारना। कृति का अर्थ है क्रिया। किसी को संवारने की प्रक्रिया को संस्कृति कहते हैं। किसी फूल, पौधे या खेत को संवारना, रत्न को काट छाँट करके संवारना उसको संस्कृत करना कहलाता है, समाज के करने योग्य कर्त्तव्य कर्मो को संवारना भी संस्कृति है। इसलिए संस्कृति का धर्म से घनिष्ठ सम्बन्ध है। संस्कृत हुए धर्म-कर्म का पालन करने वाला संस्कारगत कहलाता है। किसी देश धर्म और जाति के परम्परागत आचार-विचार ही उस देश की संस्कृति कहलाती है। मनुष्य के ऐसे कार्य जिससे उसे लोग अलंकृत समझें, श्रेष्ठ समझें, उन कर्मो का नाम संस्कृति है। जैसे-जैसे विकास होता जाता है यह दृष्टि व्यापक होती जाती है और विश्व एकता के साधन इकट्ठे होने पर यह विश्व एकता धर्म में परिणत होती है। प्राचीन संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा का है। यह दो शब्दों के योग से बना है—सम् + कृति। सम् का अर्थ है किसी को संवारना, किसी वस्तु, कर्म या व्यक्ति को संवारना। कृति का अर्थ है क्रिया। किसी को संवारने की प्रक्रिया को संस्कृति कहते हैं। किसी फूल, पौधे या खेत को संवारना, रत्न को काट छाँट करके संवारना उसको संस्कृत करना कहलाता है, समाज के करने योग्य कर्त्तव्य कर्मो को संवारना भी संस्कृति है। इसलिए संस्कृति का धर्म से घनिष्ठ सम्बन्ध है। संस्कृत हुए धर्म-कर्म का पालन करने वाला संस्कारगत कहलाता है। किसी देश धर्म और जाति के परम्परागत आचार-विचार ही उस देश की संस्कृति कहलाती है। मनुष्य के ऐसे कार्य जिससे उसे लोग अलंकृत समझें, श्रेष्ठ समझें, उन कर्मो का नाम संस्कृति है। जैसे-जैसे विकास होता जाता है यह दृष्टि व्यापक होती जाती है और विश्व

12Pt. Bold **UNIT 13**

16Pt. Bold

'A STORY AND A SONG'

14Pt. Bold Italic ***A.K. Ramanujan***

12Pt. Italic *— Seema Suri*

Objectives 12Pt. Bold

This unit of the study material will guide you towards an understanding of the short story 'A Story and a Song' by A.K. Ramanujan. A key to the exercises in your text book will help you check your answers.

Upper Side 8 Pt Extra

Introduction Bottem Side 6 Pt Extra

This short story is based on a well-known folk-tale from Karnataka, where there is are many folk-tales which have been around for hundreds of years. Known as he'gasara ha.u, these stories are passed down to successive generations orally. Women told these stories to each other and to their children while doing their household chores like cooking, grinding grain or feeding the children. Through these stories women could share their experiences and problems with each other. What they could not communicate to the men was expressed through stories where instead of characters with names they are referred to as husband and wife.

12Pt. Normal
Leading 14 Pt.

A.K. Ramanujan believed that this folklore was an important part of the culture of Karnataka and it should be recorded and preserved. This short story has also been performed as a dance drama in both India and abroad. Well known Kannada playwright Girish Karnad has used this folktale in his play *Naagmandala.*

Read the story carefully a couple of times. I think you must have been struck by the magical quality of the story—the song and the story escaping from the mouth of the housewife while she is sleeping, transforming into a man's coat and shoes and the flames gossiping in the temple. As a child, and even as an adult, you must have read or heard many folktales with magical elements in it—for instance the *Panchatomtra* and the *Hittopadesha* are full of animals who talk. Once you view this story from the perspective of folktales you will not be puzzled by the magic.

Discussion

The story is about a housewife who knew a story and a song. The story and the song can be interpreted in many ways. It could stand for the creative talent within the woman. She has a story and a song within her but it cannot be expressed. In many cultures it is believed that if you have a story to tell and don't share it with others, strange things will happen. The story and the song could also symbolize the housewife's identity or her freedom to express herself. We can presume that she does not have the confidence to be herself and the story and the song get suffocated inside her. They escape and are transformed into a man's coat and pair of shoes. When the husband comes home he naturally wants to know who has visited their house but the woman herself does not know. The husband is suspicious; he thinks she is hiding a secret lover. They argue and in anger the husband leaves to go and sleep in the temple of Hanuman, the Monkey-God.

The flame in this story refers to the flame that burns in the small temple in each home. At night when the women blow out the flames all of them go to the temple and gossip. They exchange information about the houses and when the flame from the house of the husband and wife reaches the temple the other flames ask her what happened the flame knows everything and understands everything.

Road this passage from an essay by Ramanujan:

12Pt. Normal
Leading 14 Pt.

> Here again the physical nature of stories, the necessity to tell them to keep them alive, as well as the atmosphere of suspicion and rancor bred by a story festering untold—are worth nothing. It is also worth noting that even the flames of a lamp are not truly put out—they just move to the temple for a gossip session. Neither story nor flame is ever destroyed—they only change their place or shape, with interesting consequences. The gossiping lamp-flame motif is a common one in Kannada tales—one of the devices by which secret information is revealed (like bird or animal talk overheard by the hero who understands animal languages. The various ways in which information is transmitted in these tales are worth studying).
>
> 10Pt. Italic *[Source: A.K. Ramanujan 'South Asian Culture']*

The flame explains that the story and the song have turned into a man's coat and a pair of shoes. The story is about women who are not even aware of the creativity within her. Busy with their domestic work the women are not encouraged to step outside the house or to have the confidence to speak what is in their heart and mind.

The husband overhears the flames talking and goes home satisfied. When he asks his wife about the story and the song she cannot explain because they have escaped from her mouth. It is sad that the poor housewife was not even aware of the power within her. As she did not express herself they felt suffocated and escaped.

This simple folktale is an expression of a woman's experience of reality. Underlying the story is a message for other women—listen to the voice within and express it.

Key to exercises (p. 75-76)

Reading Comprehension

6 Pt Extra

1. i. the story is turned into a pair of shoes (strange)
   ii. the song is turned into a man's coat (strange)
   iii. the coat and the shoes sit outside the house (strange)
   iv. the man becomes suspicious (normal)
   v. the man quarrels with the woman (normal)
   vi. the lamp flames when put out come to the temple and gossip (strange)
   vii. the story and the song in the woman's heart remain unexpressed (normal)
2. The story and the song signify the creativity within the housewife, her ability to express herself.
3. The housewife, in the beginning of the story, knows a story and a song. But

The flame in this story refers to the flame that burns in the small temple in each home. At night when the women blow out the flames all of them go to the temple and gossip. They exchange information about the houses and when the flame from the house of the husband and wife reaches the temple the other flames ask her what happened the flame knows everything and understands everything. The flame in this story refers to the flame that burns in the small temple in each home. At night when the women blow out the flames all of them go to the temple and gossip. They exchange information